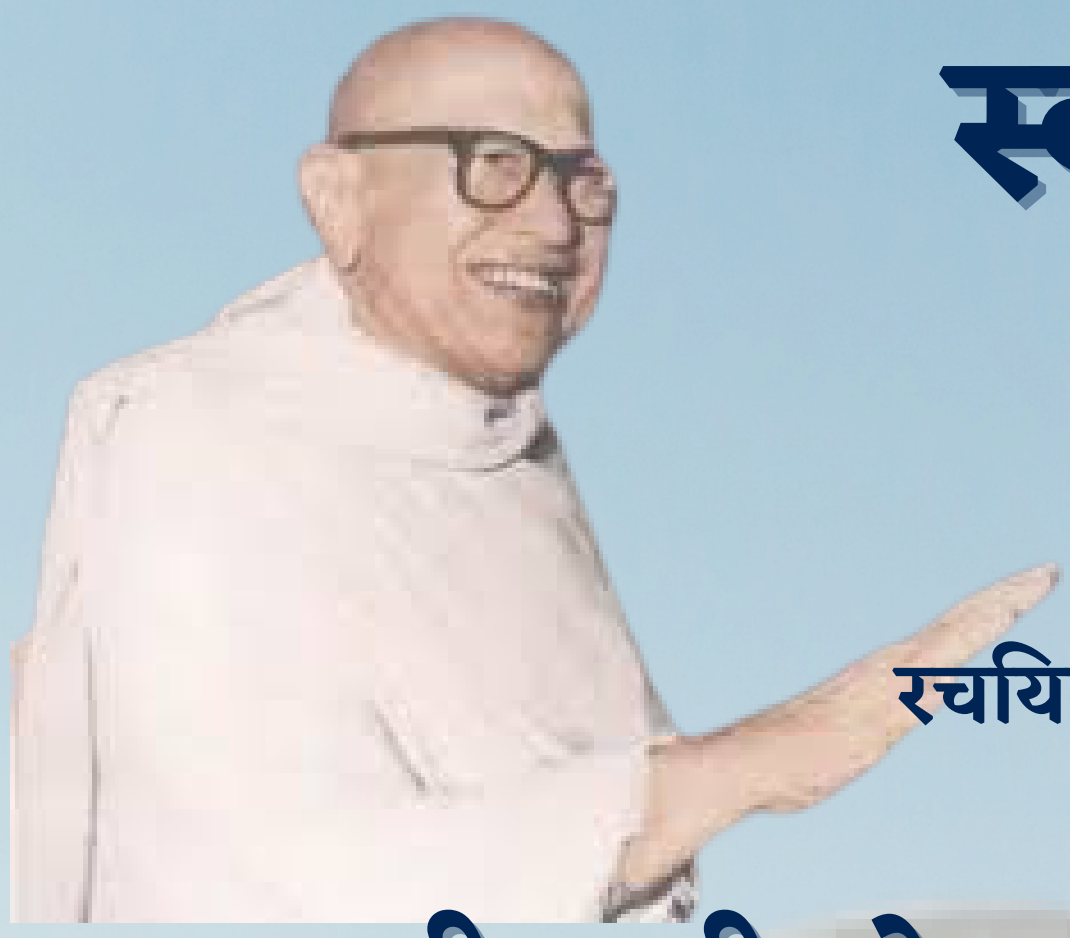

स्वागत गान

पूज्य गुरुदेव श्री के प्रथम
बार कोटा पदार्पण पर
30-04-1959

रचयिता - बाबू 'युगल' जी जैन, कोटा

पृथुल प्रतीक्षा थी ओ पावन! चिंतामणि से पाये

1

अरे पाप की दावा में, जिसका अन्तर झुलसा हो
और पुण्य के पागल पन में जो खिलखिल हुलसा हो
सुप्त हुई हो जिसकी प्रज्ञा जड़ता सी छाई हो
ज्ञान-चेतना में जिसकी चिर-तन्द्रा ही छाई हो
चिर-विमुक्ति पाने को वह इनके चरणों में आये
पृथुल प्रतीक्षा थी ओ पावन! चिंतामणि से पाये ।

2

कर्तृवाद की कारा में घुटती थी युग की श्वास
मृगतृष्णा में पड़े बिलखते थे मृग चिर के प्यासे
अनजाने किस विधि-विधान से मरु में सरिता लहरी
महानाश की बेला में तुम बनकर आये प्रहरी
अरे ! भयंकर भव-भँवरों से तुमने प्राण बचाये
पृथुल प्रतीक्षा थी ओ पावन !चिंतामणि से पाये ।

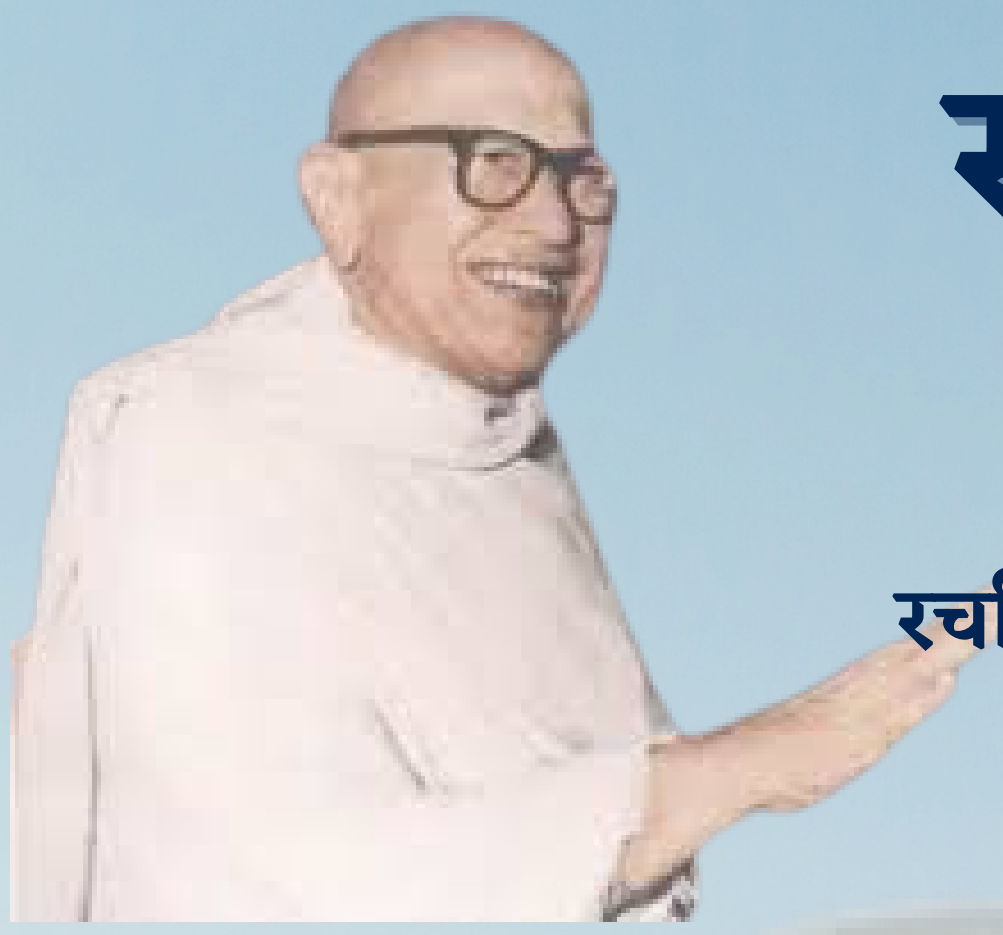

स्वागत गान

पूज्य गुरुदेव श्री के प्रथम
बार कोटा पदार्पण पर

रचयिता - बाबू 'युगल' जी जैन, कोटा

3

पूज्या विदुषी चंपा, शांता की है अकथ कहानी
अन्तर्दृष्टि बिना न कभी ये जा सकती पहिचानी
ये सौराष्ट्र वकील रामजी उच्च कोटि के प्लीडर
अब चैतन्य वकील वही सौराष्ट्र संघ के लीडर
पूज्य खेमजी, हिम्मत प्रभृति के गुण कैसे गायें
पृथुल प्रतीक्षा थी ओ पावन ! चिंतामणि से पाये ।

4

अरे! चन्द्र के नक्षत्रों सा यह तेरा परिकर है
और तुम्हारी शशि-द्युति से ज्योतित इनका अन्तर है
ये हैं मीन, सलिल तुम हो, तुम प्राण और ये काया
स्वर्ण-पुरी में किस भव का यह चित्र सहज उतराया
हम सब दीन मात्र श्रद्धा के सुमन चरण में लाये
पृथुल प्रतीक्षा थी ओ पावन ! चिंतामणि से पाये।

2/2